Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ-6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक- डॉ. रामकुमार वर्मा

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

" मैं ही क्या सारे नगर-निवासी यह त्योहार मना रहे हैं, नहीं मना रही हो तुम ! धाय माँ, तुम ! पहाड़ बनने से क्या होगा ------- जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने में नाच नाचेंगी !" (पृष्ठ सं० 87)

प्रश्न (क) वक्ता और श्रोता कौन हैं ? नगर निवासी कौन-सा त्योहार मना रहे हैं और क्यों ?

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश में वक्ता रावल सरूपसिंह की बेटी सोना है और श्रोता पन्ना हैं, जो कुँवर उदयसिंह की धाय माँ एवं उनकी संरक्षिका है।

नगर-निवासी आज बनवीर के कहने पर दीपदान का उत्सव मना रहे थे, वैसे आज कोई उत्सव का दिन नहीं था। लेकिन सभी नगर-निवासी बनवीर के बनवाए गए मयूर-पक्ष कुंड में दीपदान करके नाच-गा रहे थे, लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीपदान करके नाच रही थीं। वे ऐसा इसलिए कर रही थीं क्योंकि यह बनवीर का आदेश था।

प्रश्न (ख) उस त्योहार का आयोजन किसने, किस उद्देश्य से किया था ?

उत्तर - इस नृत्य का आयोजन बनवीर ने करवाया था। इस आयोजन के पीछे जो उद्देश्य था। वह अत्यन्त क्रूरतापूर्ण

और अनुचित था। बनवीर के द्वारा आयोजित इस उत्सव के पीछे षड़यन्त्र था कि नगर के लोग नृत्य देखते हुए रास-रंग में डूब जाएँगे और उसे अपने षडयंत्र को सफल बनाने का मौका मिल जाएगा। वास्तव में बनवीर जानता था कि उदयसिंह के रहते हुए वह राजा नहीं बन सकेगा। इसलिए इसी महत्त्वाकांक्षा को पूरी करने के लिए वह महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह को अपने रास्ते से हटाना ज़रूरी था। अतः आज इस नृत्य व दीपदान के आयोजन के पीछे उसने महाराणा विक्रमादित्य और कुँवर उदयसिंह की हत्या करने का षड़यन्त्र रचा था।

प्रश्न (ग) 'धाय माँ तुम्हारे पहाड़ बनने से क्या होगा?—वक्ता के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर- प्रस्तुत कथन सोना का है। सोना रावल सरूप सिंह की बेटी है। बनवीर के द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव में शामिल होने के लिए कुँवर उदयसिंह को बुलाने आई थी लेकिन पन्ना ने उसे यहाँ से चले जाने के लिए कहा तब सोना उन पर कटाक्ष करते हुए कहती है कि आज के इस त्योहार में सभी नगर-निवासी भाग ले रहे हैं और उत्सव मना रहे हैं परन्तु बस एक तुम नहीं मना रही हो। वह जानती है कि पन्ना कुँवर की रक्षा करने के लिए ही न खुद उत्सव में जा रही है और न ही कुँवर को भेज रही है। इसलिए वह उन्हें बनवीर की शक्ति का एहसास दिलाने के लिए कहती है कि धाय पहाड़ बनने (अर्थात् बनवीर के कार्य में रुकावट डालने) से कुछ नहीं होगा, उल्टे बनवीर के लिए बोझ बन जाओगी, ऐसा बोझ जिसे वह जब चाहे तब अपने सिर से उतार फेंकेगा अर्थात् तुम्हें मार डालेगा।

प्रश्न(घ) 'और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी! आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएँगी, गिरने में नाच नाचेंगी'। — कथन का आशय स्पष्ट करो।

उत्तर- सोना पन्ना से नदी बनकर बहने का आग्रह करती है ताकि पत्थर भी तुम्हारा बोझ धारण करेंगे।

सोना के कहने का आशय यह है कि बनवीर की योजनाओं को कुचक्रों को असफल करने का दुस्साहस न करो। कुँवर के जीवन को बचाने की कोशिश में चट्टान की तरह दृढ़ न बनो अन्यथा बनवीर तुम्हें भी अपने रास्ते से हटा देगा। अतः समझदारी इसी में है कि बनवीर की योजनाओं को सफल (महाराणा विक्रमादित्य को समाप्त कर कुँवर को भी अपने मार्ग से हटाकर स्वयं राजा बनने को भी अपने मार्ग से हटाकर स्वयं राजा बनने की महत्त्वाकांक्षा को) बनाने में बनवीर का साथ दो, इसी में तुम्हारी भलाई है। वह पन्ना को उसके निश्चय से डिगाने का प्रयत्न कर रही है, ताकि बनवीर अपने उद्देश्य में सफल हो जाए।

[अंतिम पृष्ठ]